स्त्रीपर्व कथासार

स्त्रीपर्व में जलप्रदानिकापर्व, स्त्रीविलापपर्व, और श्राद्धपर्व नामक तीन उपपर्व तथा कुल मिलाकर ८२२ श्लोक हैं।

१. जलप्रदानिकपर्व

इस उपपर्व में (१-१५) १५ अध्याय तथा ४१७ श्लोक हैं। अपने सौ पुत्रों के मारे जाने पर धृतराष्ट्र अत्यंत शोक संतप्त हो गये। उनकी अवस्था को देखकर संजय ने कहा कि हे राजन्! आप क्यों शोक कर रहे हैं? इस युद्ध में अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ मारी गयी हैं। आप पुत्र, बन्धु, सुहृदों का प्रेत कार्य कराइये। उसकी बात सुनकर शोक विह्वल धृतराष्ट्र ने कहा कि हे संजय! पुत्र, अमात्यजन, मित्र सब मारे गये। अब मैं यहाँ दुःख भोगूँगा। परशुराम, नारद, व्यास आदि के हितवचनों को नहीं सुना। श्रीकृष्ण या भीष्म ने भलाई के लिए जो कुछ कहा उसे पुत्र प्रेम से नहीं सुन लिया। इसका फल अब मुझे भोगना पड रहा है। धृतराष्ट्र के शोक को निवारण करते संजय ने कहा कि हे नृपश्रेष्ठ! आपके पुत्र दुर्योधन यौवन के दर्प से यथेष्ट दुर्व्यवहार किया। दुष्ट दुःशासन, कर्ण, शकुनि, चित्रसेन तथा शल्य उसके अमात्य थे। उसने किसी का धार्मिक वचन नहीं सुना। आप भी तटस्थ थे। कोई उचित सलाह नहीं दी। अब पछताने से लाभ नहीं। इसलिए आप शोक न करें। इस तरह संजय ने धृतराष्ट्र को आश्वासन दिया। विदुर ने भी सांत्वना देते हुये कहा कि हे राजन्! आप क्यों शोक में पडे हैं? समस्त प्राणियों की यही आखिरी गति है। कोई भी काल का उल्लङ्घन नहीं कर सकता। युद्ध में सभी वीर उत्तमगति को प्राप्त किये हैं। उनके लिए शोक करना उचित नहीं है। धृतराष्ट्र के पूछने पर विदुर ने सारे जगत् की अनित्यता बतायी। दुःखमय संसार की यथार्थ स्थिति का वर्णन किया। उसने कहा कि संसार सागर में गिरा हुआ मनुष्य भयपीडित होकर भी जीवन की आशा से विरक्त नहीं होता। विद्वान् पुरुष संसारचक्र की गति को जानकर वैराग्य से संसार के सारे बंधनों को काटते हैं। हे राजन्! पण्डित लोग कहते हैं कि प्राणियों का शरीर रथ है। सत्त्व सारथि है। इन्द्रियाँ घोडे हैं। कर्म बुद्धि रज्जु है। जो पुरुष घोडों के वेग का अनुसरण करता है वह इस संसार चक्र में पहिये के समान घूमता है। जो संयम से इन्द्रियों को काबू में रखता है वह संसार में नहीं गिरता।

पुत्रशोक से संतप्त धृतराष्ट्र को व्यासमहर्षि ने समझाते हुए कहा कि हे धृतराष्ट्र! यह जीवजगत् अनित्य है। सनातन परम पद नित्य है। जीवित के अन्त में मृत्यु ही होती है। इसकेलिए शोक करना उचित नहीं। कौरवों का यह विनाश अवश्यंभावी था। दैव के विधान को कोई भी रोक नहीं सकता। देवताओं की सभा में मैं ने जो कुछ देखा, सुना वह तुम्हें बताता हूँ। प्राचीनकाल में एक बार इन्द्र की सभा में पृथ्वी ने देवताओं से प्रतिज्ञात कार्य को शीघ्रता पूर्ण करने की विनति की। उसकी बात सुनकर विष्णु ने कहा कि धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से सबसे बडा

दुर्योधन तेरा कार्य सिद्ध करेगा। सारे भूपाल कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक दूसरे का वध कर डालेंगे। तुम्हारे भार का नाश हो जायेगा। हे धृतराष्ट्र! क्षत्रियलोक का संहार के लिए कलि का अंश ही दुर्योधन के रूप में गान्धारी के पेट से पैदा हुआ। दैवयोग से उसके भाई भी वैसे ही
उत्पन्न हुए। मामा शकुनि और कर्ण भी उसके साथ मिल गये। आपके पुत्र अपने ही अपराध से नष्ट हो गये। उनके लिए शोक न करो। पाण्डवों ने कुछ भी अपराध नहीं किया। व्यास का वचन सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा कि हे विप्रवर! मैं ने समझ लिया कि सब कुछ देवतावों की प्रेरणा से हुआ है। शोक न करने का प्रयत्न करूँगा। उसकी बात सुनकर महर्षि व्यास वहीं अंतर्धान हो गया।

सैन्य के साथ दुर्योधन के मारे जाने पर संजय की दिव्यदृष्टि चली गयी। धृतराष्ट्र की सभा में उपस्थित होकर संजय ने महाराज से कहा कि हे राजन्! सब लोग आप के पुत्र दुर्योधन से शान्ति की याचना की। लेकिन पाण्डवों के साथ वैरभाव से सारे भूमण्डल को नाश कर दिया। ससैन्य आपके पुत्र, बन्धु युद्ध में मारे गये। आप उनका अंतिम संस्कारसंस्कार करवाइये। यह घोर वचन सुनकर धृतराष्ट्र निश्चेष्ट होकर पृथ्वी पर गिर पडा। धर्मज्ञ विदुर धृतराष्ट्र की अवस्था देखकर उसके पास आया और बोला कि हे राजन्! आप शोक मत कीजिए। सब प्राणियों की यही अंतिम गति है। समस्त प्राणी काल के अधीन हैं। उसका उल्लङ्घन कोई न कर पाता। युद्ध में मारे गये सब लोग स्वर्ग चले गये। उनके लिए शोक करने की क्या आवश्यकता है? हे राजन्! स्वयं अपने मन को आश्वासन देकर अपने कर्तव्य के बारे में सोचिए। विदुर की बात सुनकर राजा ने कुन्ती के साथ गान्धारी तथा अन्य स्त्रियों को शीघ्र ले आने को उसे आदेश देकर धृतराष्ट्र रथ पर सवार हुये। पुत्र शोक से पीडित गान्धारी कुन्ती तथा अन्य स्त्रियों के साथ धृतराष्ट्र के पास आयी। वे सब फूट फूट कर रोने लगीं। विदुर ने सब को आश्वासन दिया। धृतराष्ट्र के साथ सब लोग कृपाचार्य, अश्वत्थामा तथा कृतवर्मा के पास पहुँचे। धृतराष्ट्र को देखते ही तीनों वीर अश्रु गद्गद कण्ठ से बोले कि हे महाराज! आपका पुत्र अत्यन्त दुष्कर कर्म करके अनुचर सहित इन्द्रलोक गया। सारी सेना युद्ध में नष्ट हो गयी। हम तीन ही जीवित बचे हैं। कृपाचार्य न पुत्रशोक से पीडित गान्धारी से कहा कि हे देवि! आप के पुत्र निर्भय होकर वीरोचित युद्ध करके वीरगति को प्राप्त हुए हैं। अतः उनके लिए आपको शोक नहीं करना चाहिए। युद्ध के बाद पाण्डवों को भी विशेष लाभ नहीं है। भीमसेन ने आपके पुत्र को अधर्म से मारा। इसलिए अश्वत्थामा को आगे करके हम लोग रात को पाण्डवों के सोते समय उनके शिबिर में पहुँचकर धृष्टद्युम्न के साथ सारे पाञ्चाल तथा द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को मार डाला। इस प्रकार आपके तथा द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को मार डाला। इस प्रकार आपके पुत्र के शत्रुओं को संहार करके हम तीनों भाग जा रहे हैं। यहाँ ठहर नहीं सकते। हम से बदला लेने के लिए पाण्डव किसी न किसी समय यहाँ आने की संभावना है। वे तीनों धृतराष्ट्र से अनुज्ञा पाकर एक दूसरे से बिदा लेकर तीन मार्गों पर चले गये।

कृपाचार्य हस्तिनापुर, कृतवर्मा अपने देश की ओर तथा अश्वत्थामा व्यासाश्रम की ओर निकल गये। तीनों वीर सूर्योदय से पहले ही अपने अभीष्ट स्थल पहुँचे। तत्पश्चात् पाण्डवों ने अश्वत्थामा के पास पहुँचकर युद्ध में उसे पराजित किया।

पुत्रशोक से पीडित युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ धृतराष्ट्र के पास गया। श्रीकृष्ण, सात्यकि और युयुत्सु भी उनके पीछे पीछे गये। द्रौपदी भी पाञ्चाल स्त्रियों के साथ उनका अनुसरण किया। सब लोग गङ्गातट पहुँचे। वहाँ आर्तनाद करती हुई सहस्रों स्त्रियों ने

युधिष्ठिर को चारों ओर से घेर लिया और निंदापूर्वक वचन कहने लगीं। उस समूह को लाँघकर युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के पास पहुँचा और उसे प्रणाम किया। तदनन्तर एकैक पाण्डुपुत्र उसे प्रणाम करके अपने नाम बताये। शोक से व्याकुल धृतराष्ट्र अप्रसन्न ही युधिष्ठिर को गले से लगाकर भीम को खोजने लगा। उस समय उनके मन में कुभावना जाग उठी। उनके हृदय को जानकर श्रीकृष्ण ने भीमसेन को हटा दिया और दोनों हाथों से लोहमयी मूर्ति उसके सामने रख दी। धृतराष्ट्र ने उसे असली भीमसेन समझकर दोनों बाहों से दबाकर उसे तोड डाला। मुँह से खून निकलने से उससे भीगकर धृतराष्ट्र पृथ्वी पर गिर पडा। तदनन्तर संजय ने राजा को पकडकर उठाया और आश्वासन देते हुये कहा कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। क्रमशः धृतराष्ट्र का आवेश दूर हो गया और वह शोक में डूब गया। श्रीकृष्ण ने असली बात कहकर उसे समझाया। तत्पश्चात् धृतराष्ट्र का क्रोध उतर गया और मन प्रसन्न हुआ। उसने अर्जुन, नकुल सहदेव को गले से लगाया। तदनन्तर सभी पाण्डव श्रीकृष्ण के साथ गान्धारी के पास गये। देवी गान्धारी ने पाण्डवों को शाप देने का संकल्प किया। यह जानकर महर्षि व्यास शीघ्र वहाँ आ पहुँचा और उसे क्रोध नियन्त्रित करने का उपदेश दिया। गान्धारी ने कहा कि हे भगवान्! पाण्डवों के प्रति मुझे असूया नहीं। उनका विनाश भी मैं देखना नहीं चाहती। पुत्रशोक से मेरा मन विह्वल हो गया है। कुरुवंश का नाश तो दुर्योधन, मेरे भाई शकुनि, कर्ण तथा दुःशासन के अपराध से ही हुआ है। इसमें पाण्डुपुत्रों का कोई अपराध नहीं। श्रीकृष्ण के देखते ही गदायुद्ध में दुर्योधन के प्रति भीमसेन ने जो अनुचित व्यवहार किया वह मुझे अच्छा नहीं लगा। गदायुद्ध शिक्षा में अपने से दुर्योधन को अधिक कुशल जानकर भीमसेन ने उसकी नाभि के नीचे प्रहार किया, यह मेरे क्रोध को बढा दिया। गान्धारी की यह बात सुनकर भयभीत भीमसेन ने विनयपूर्वक कहा कि यह धर्म हो या अधर्म। मैंने दुर्योधन से डरकर प्राण बचाने के लिए ऐसा किया। कोई मारने का साहस नहीं करता था। इसलिए मैंने विषमपूर्ण व्यवहार किया। भारी सभा में द्रौपदी का अपमान किया। उसने सभा में उसको अपनी बाँयीं जाँघ दिखायी। इसलिए मैं ने ऐसा व्यवहार किया। गान्धारी ने अपने पुत्र के अपराध को मान ली। दुःशासन को मारकर भीमसेन ने जो उसका खून पी लिया उसे गान्धारी ने अनुचित कर्म कह दिया। इसके उत्तर में भीमसेन ने कहा कि दूसरों का खून नहीं पीना चाहिये। फिर अपना ही खून कैसे पी सकता है? हे माँ! आप

चिन्ता न करें। वह खून मेरे दन्त और ओष्ठ के आगे नहीं जा सका। केवल मेरे दोनों हाथ ही रक्त से भीगे हुये थे। मेरी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए मैंने ऐसा किया। गान्धारी ने कहा कि सौ पुत्रों को मारते समय अल्प अपराधवाले किसी एक पुत्र भी यदि शेष रह जाता तो मुझे इतना दुःख नहीं होता। भीमसेन से ऐसा कहकर क्रोध से पूछा कि युधिष्ठिर कहाँ है? यह सुनकर भयभीत युधिष्ठिर मधुर वचन बोला कि हे देवि! आपके पुत्रों का संहारहेतु युधिष्ठिर मैं हूं। मुझे आप शाप दीजिए। ऐसा कहते युधिष्ठिर शरीर को झुकाकर गान्धारी के चरणों पर गिरना चाहता था। इतने में पट्टी के भीतर से ही गान्धारी ने उसके पैरों की अङ्गुलियों के अग्रभाग को देख लिया। देखते ही सुन्दर और दर्शनीय उसके नख काले पड गये। बडे भाई की अवस्था देखकर अर्जुन श्रीकृष्ण के पीछे छिप गये। क्रमशः गान्धारी का क्रोध शान्त हो गया और उसने माँ के समान सबको सान्त्वना दी। तदनन्तर पाण्डव माता कुन्ती
के पास गये। रोती द्रौपदी को उसने समझाकर धीरज बँधाया। तदनन्तर उन दोनों पाण्डवों के साथ गान्धारी के पास गये। गान्धारी ने द्रौपदी और कुन्ती को समझाया और कहा कि मेरे ही अपराध से कुरुवंश का नाश हुआ है।

२. स्त्रीविलापपर्व

इस उपपर्व में (१६-२५) दस अध्याय तथा ३२७ श्लोक हैं।

गान्धारी ने दिव्यदृष्टि से कौरवों का विनाशस्थल देखा। अमङ्गलमय दृश्य को देखकर वह अनेक प्रकार से विलाप किया। तदनन्तर व्यास की आज्ञा पाकर धृतराष्ट्र तथा पाण्डव युद्धभूमि की ओर चले। कुरुवंश स्त्रियाँ वहाँ जाकर अपने पति, भाई, बन्धुओं के शरीरों को देखकर आर्तनाद किये। दुर्योधन के पार्थिव शीरर तथा उसके पास रोती हुई पुत्रवधू को देखकर श्रीकृष्ण के संमुख गान्धारी ने विलाप किया। अपने अन्य पुत्र तथा भाई शकुनि को देखकर वह अत्यंत दुःखित हुई। अन्य स्त्रियों के विलाप को देखकर श्रीकृष्ण के सम्मुख गान्धारी ने शोक प्रकट किया।

३. श्राद्धपर्व

इस उपपर्व में (२६-२७) दो अध्याय तथा ७४ श्लोक हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने गान्धारी से कहा कि हे गान्धारी! शोक मत करो। तुम्हारे ही अपराध से कौरवों का विनाश हो गया। दुर्योधन का दुष्ट व्यवहार को समीचीन मानकर तुमने अपराध किया। यह दोष मुझ पर क्यों आरोप करना चाहती हो? श्रीकृष्ण के अप्रिय वचन सुनकर गान्धारी चुपचाप हो गयी। धृतराष्ट्र के पूछने पर युधिष्ठिर ने इस युद्ध के बारे में बताया। धृतराष्ट्र की आज्ञा से युधिष्ठिर ने सब का अंतिम संस्कार करवाया। कुन्ती ने सहसा कर्ण के जन्म रहस्य बताया। इसे सुनकर युधिष्ठिर बहुधा विलाप किया और बोला कि इस रहस्य को न जानने के कारण अपने बडे भाई को मरवा दिया। अतः आज से स्त्रियों के मन में कोई गुप्त रहस्य

छिपा नहीं रह सकेगा। ऐसे कहकर युधिष्ठिर गङ्गाजल से भाइयों के साथ तट पर आया।

।। स्त्रीपर्व कथासार समाप्त ।।